ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 400-403
www.allresearchjournal.com
Received: 08-08-2020
Accepted: 10-09-2020

डॉ. मनिका शइकीया
सहकारी अध्यापिका, हिन्दी विभाग
नगाँव गर्ल्स कॉलेज, असम, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मनिका शइकीया
सहकारी अध्यापिका, हिन्दी विभाग
नगाँव गर्ल्स कॉलेज, असम, भारत

साहित्य में प्रव्रजनकारियों की मनोवेदना प्रकाश : हिन्दी कहानियों के विशेष संदर्भ में

डॉ. मनिका शइकीया

प्रस्तावना

प्रव्रजन का साधारण अर्थ है, एक या ततोधिक व्यक्तियों द्वारा स्थायी अथवा दीर्घ समयावधि के लिए एक स्थान से दूसरी स्थान में आश्रयस्थल बदलने की प्रक्रिया। प्रव्रजन के कारण ही किसी अंचल विशेष की जनसंख्या की ढाँचा में प्रभाव पड़ता है। यह एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया है। साथ ही यह सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्यायों के कारक के रुप में चिह्नित हो चुका है। समाज विज्ञानियों ने प्रव्रजन के कारणों की व्याख्या करते हुए दो कारण उल्लेख किये हैं – आकर्षणी कारण और विकर्षणी कारण। आकर्षणी कारणों में रोजगार, निरापत्ता, उन्नत चिकित्सा सुविधा, अच्छी बाजार व्यवस्था, स्वास्थ्य सम्मत परिवेश आते हैं तो विकर्षणी कारणों में बेरोजगारी, अनुन्नत शिक्षा व्यवस्था युद्ध, महामारी, स्वास्थाय सेवा की कमी, यातायत की असुविधा आदि के बारे में आलोचना की जाती है। 1 प्रव्रजनकारियों के जीवन, उनका मनोजगत विश्लेषण करने पर देखा जाता है कि अपने देश की वायु, मिट्टी, पानी रस से परिपुष्ट होते रहने के बीच में ही अचानक किसी विपर्यय के कारण दूसरे देश के अनजान लोगों के बीच जाकर नया जीवन-संग्राम शुरु करने को विवश होते हैं। ऐसी अवस्था में अधिकांश समय ही इन लोगों को संदेह की दृष्टि से ही देखा जाता है । इसके साथ ही इन लोगों को मौलिक अधिकार प्राप्ति के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है । हिन्दी साहित्य के यशस्वी साहित्यकार मोहन राकेश, भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा, बलवंत सिंह, कृशान चन्दर आदि ने अति संवेदनात्मक रूप से प्रव्रजनकारियों के जीवन के घाट-प्रतिघाटों को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया है ।

समस्या का औचित्य

समय समय पर प्रव्रजन पर गम्भीर रूप से आलोचना होती आयी है। प्रव्रजन जब हद पार करके लक्ष्यस्थल अंचल की जातीय सत्वा, संस्कृति के साथ-साथ राजनीतिक संकट बनने लगे, जन वैचित्र्य के लिए भी संकट लाने लगे, उस समय प्रव्रजन समस्या बन जाता है और तभी प्रव्रजन की समस्या समाधानार्थ पथ का संधान करना पड़ता है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक दृष्टिकोण से तो इस समस्या को विश्लेषण किया जाता रहा है, साथ ही साहित्यकारों ने भी संवेदनात्मक दृष्टिकोण से प्रव्रजकों की मानसिक अवस्था को झांककर देखने का प्रयास किया है। यहाँ कुछ प्रश्न उपस्थित होते हैं, यथा-

1. क्या प्रव्रजनकारी स्वेच्छा से प्रव्रजन करता है ?
2. क्या प्रव्रजनकारी लक्ष्य अंचल की जातीय सत्वा, सांस्कृतिक विरासत के प्रति खतरा ही उत्पन्न करती है या संस्कृति को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग भी देते है ?
3. क्या प्रव्रजनकारी लक्ष्य अंचल की अनजान परिवेश में सम्पूर्ण सुरक्षित अनुभव करते हैं ?
4. क्या प्रव्रजनकारी की मानसिक स्थिति कैसी रहती है ?
5. प्रव्रजनकारियों के प्रति लोगों का व्यवहार कैसा रहता है ?
6. क्या इन लोगों का राजनीतिक, आर्थिक शोषण भी होता है ?
7. सरकार ऐसे लोगों की समस्याओं के समाधानार्थ क्या उपाय करती है ? आदि

समस्या कथन

साहित्य में प्रव्रजनकारियों की मनोवेदना प्रकाश *:* हिन्दी कहानियों के विशेष संदर्भ में – इस गवेषणा पत्र के जरिए इन समस्याओं पर हिन्दी साहित्यकारों ने किस दिशा में आलोचना करने का प्रयास किया है तथा इन समस्याओं के प्रति अपनी मनोभावना किस प्रकार व्यक्त किया है – विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

अपना जन्मस्थान त्याग करके किसी विपरीत परिस्थिति में जब कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह अन्य एक सम्पूर्ण अपरिचित वातावरण, अपरिचित समाज में प्रवेश करता है, उस समय उन लोगों की शंकाओं का निरामय कैसे होता है, होता भी या नहीं अथवा उनकी शंकाओं को दूर करने का क्या समाधान सूत्र लेखक, साहित्यकारों ने देने का प्रयास किया है, उसे प्रस्तुत करना ही इस अध्ययन का उद्देश्य है।

शोध विधि

हिन्दी के रचनाकारों की रचनाओं में कहाँ, किस रूप में प्रव्रजन से सम्बन्धित बात उठायी गयी है, उनकी समस्याओं को किस दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है आदि विभिन्न पक्षों को उनकी रचनाओं की उद्धृति आदि के सहारे विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग करके विश्लेषण किया जायेगा ।

मूल विषय विशेलेषण

प्रव्रजन अनादि काल से ही चलती आ रही प्रक्रिया है। युग परिवर्तन के साथ-साथ इस स्वाभाविक प्रक्रिया ने जटिल रूप धारण करने के कारण प्रव्रजन प्रक्रिया को गुरुत्व के साथ आलोचना करने का समय समागत हुआ है। प्रव्रजन अधिकार है या अपराध है- इस संदर्भ में The Reluctant Fundamentalist के लेखक महचिन हामिद ने The Guardian में लिखा है – " मैं प्रव्रजन को एक मानव अधिकार के रूप में विश्वास करता हूँ, मत प्रकाश का अधिकार या जाति, धर्म, लिंग या यौन वैषम्य विरोधी अधिकार की तरह ही यह अधिकार है। "[2]

इन्होंने और लिखा है – "हम सबलोग ऐतिहासिक रूप से प्रव्रजनकारी हैं। हमारे पूर्वज अन्य किसी स्थान से प्रव्रजित हुए हैं। अनागत दिनों में जलवायु परिवर्तन, रोग, राष्ट्र की व्यर्थता, युद्ध आदि के कारण लाख-लाख यहाँ तक कि कड़ोरों की संख्या में लोग एक देश छोड़कर दूसरे देश में आश्रय लेने को बाध्य होंगे*;* की पूर्व सभी परिसंख्या ही म्लान हो जाएंगे। "[3]

प्रसिद्ध साहित्यकार मोहन राकेश कृत बहु-चर्चित नाटक 'आषाढ़ का एक' दिन में महाकवि कालिदास को उनकी प्रेमिका मल्लिका उज्जयिनी जाने का परामर्श देती है, तब कालिदास ने अपनी आशंका इस प्रकार व्यक्त करते हैं – " यहाँ से जाकर मैं अपनी भूमि से उखड़ जाऊंगा । "[4]

फिर कहते हैं – "नयी भूमि सुखा भी तो हो सकता है! " [5]

इस प्रसंग का उत्थापन इसीलिए किया गया है कि नयी भूमिखंड में प्रव्रजनकारियों को किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा अथवा उस जगह के पूर्व निवासी उन लोगों को किस रूप में ग्रहण करेंगे, इस विषय में संदेह रहने के बावजूद भी रिस्क लेकर प्रव्रजन करने को तैयार हो जाते हैं ।

'परमात्मा की कुत्ता' कहानी में कहानीकार मोहन राकेश ने भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय भारत में आनेवाला एक परिवार का दुख-दुर्दशा का वर्णन किया गया है। इस परिवार का धार्मिक परिचय कहानीकार ने नहीं दिया है। भारत आने के बाद सरकार द्वारा भूमि परिवार को दी गयी, किन्तु सरकारी कर्मचारियों की अमनयोगिता अथवा कूटनीति के चलते परिवार को कृषि अनुपयोगी गड्ढा ही मिली। इस भूमिखंड को बदल देने के लिए कार्यालय में परिवार द्वारा आवेदन करने के बावजूद भी दो वर्षों तक कोई फल नहीं मिला। उपायहीन होकर परिवार का मूल व्यक्ति परिवार के अन्य व्यक्तियों को लेकर सरकारी कार्यालय में ऊपरवाला से मिलने स्वयं आता है। कहानी में 'कुत्ता' शब्द प्रतीकात्मक रूप से प्रयोग किया गया है । कुत्ता तभी भौंकता है, जब वह अस्वाभाविक परिस्थिति में पड़ता है। आलोच्य कहानी में भी नायक ने स्वयं को ' परमात्मा का भेजा हुआ कुत्ता'

कहा है। एक ओर अपना देश त्याग करने की वेदना और दूसरी ओर विदेश में सरकारी पक्ष द्वारा वंचना का बलि होकर हाहाकार करनेवाले लोगों की व्यथा। कार्यालय में बाबुओं के पीछे घुमते-घुमते यहाँ तक कि वह अपना नाम, परिचय भी खो देता है। कहानी के अंततक अत्यंत जिद्दी नायक को उसका अधिकार मिल ही जाता है। किन्तु समाज के कितने लोग इस प्रकार अपना अधिकार लेने को सक्षम है, यह प्रश्न का विषय है । सम्पूर्ण कहानी में अत्यंत संवेदनशील संवाद है - "एक तुम्हीं नहीं, यहाँ तुम सबके-सब कुत्ते हो .... तुम सब भी कुत्ते हो, और मैं भी कुत्ता हूँ। फर्क़ सिर्फ़ इतना है कि तुम लोग सरकार के कुत्ते हो – हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ़ से भौंकते हो। मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ। .... तुम पर भौंकना मेरा फर्ज़ है, मेरे मालिक का फरमान है ।" [6]

अन्य एक कहानीकार निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' कहानी का नायक मुकर्जी एक डाक्टर है। वार्मा में जपानियों द्वारा आक्रमण करते समय वह आकर एक छोटा-सा पहाड़ी शहर में रहने लगता है। हांलाकि जीवन का अधिकांश समय पहाड़ी शहर में व्यतीत करने के बावजूद भी अपनी मातृभूमि को भूल नहीं पाता है। लेखक के शब्दों में - " आधा वार्मिज "इस डाक्टर ने भारत आने की रास्ते में ही पत्नी को खोया। ह्युबर्ट नामक परोसी के सामने अपनी व्यथा को इस प्रकार व्यक्त करता है - " मैं कभी-कभी सोचता हूँ, इंसान जिंदा किसलिए रहता है- क्या उसे कोई और बेहतर काम करने को नहीं मिला ? हजारों मील अपने मुल्क से दूर मैं यहाँ पड़ा हूँ – यहाँ कौन मुझे जानता है ... यही शायद मर भी जाऊंगा । ह्यूबर्ट, क्या तुमने कभी महसूस किया है कि एक अजनबी की हैसियत से परायी जमीन पर मर जाना काफी खौफनाक बात है ... ! " [7]

होम सिकनेस (Home Sickness) एक ऐसी बीमारी है, जिसकी चिकित्सा डाक्टर भी नहीं कर सकता है । जिसकी केवल पिचका नाक और चंचल आखों में ही अब वार्मिज होने का चिह्न मात्र शेष है, वैसा एक व्यक्ति भी मन में एक आशा पाल रखा है – मृत्यु के पूर्व एकबार वार्मा अवश्य जायेगा । वह कहता है - "... कुछ भी कह लो, अपने देश का सुख कहीं नहीं मिलता। यहाँ तुम चाहे कितने वर्ष रह लो, अपने को हमेशा अजनबी ही पाओगे । " [8]

प्रस्तुत कहानी के उद्धृतांश के दवारा यह साबित करने का प्रयास किया जा रहा है कि कितना भी सुरक्षित अथवा मनोनुकूल परिवेश में व्यक्ति क्यों ना रहे, प्रव्रजनकारी हमेशा निज मातृभूमि का कोमल स्पर्श, अपनापन भूल नहीं सकता है और पराये देश में हमेशा असुरक्षित अनुभव करता है।

मोहन राकेश कृत अन्य एक कहानी मलवे का मालिक कहानी में भी कुछ ऐसा ही भाव प्रस्फुटित हुआ है । भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय जो भीषण साम्प्रदायिक संघर्ष हुआ था, उसी समय गनी मियां अमृतसर छोड़कर लाहोर गया हुआ था। उसका बेटा, बहु अमृतसर में ही रह गया परोसियों के भरोसे । किन्तु धर्मीय उन्माद से परिचालित लोगों के हाथों उनकी मृत्यु हुई। अपना खून-पसीने से सजाया घर भी दुस्कृतिकारियों ने जला दी । देश का विभाजन हुआ। धीरे-धीरे दोनों देशों में शांति आयी । आठ वर्ष बाद सीमावर्ती राज्यों में प्रीति बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित हॉकी मैच देखने के बहाने लाहोर से मुसलमानों की एक टोली अमृतसर आती है। दरअसल वे लोग आये थे अपने जन्मस्थल की मोह में बंदी होकर । प्रत्येक व्यक्ति घुमघुमकर तलाश रहा है अपना घर, अपनी मिट्टी जिसे वे छोड़ गये थे। कहानी का मूल वक्तव्य यही है कि जितनी भी कठिन परिस्थिति में पताड़ित होकर किसी को प्रव्रजन ही क्यों ना करना पड़े, अपनी भूमि, अपने लोग सदा ही अपने रहते हैं।

उपसंहार

ऊपर आलोचित विषयों को देखने के बाद हम कह सकते हैं कि प्रव्रजन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि विभिन्न समस्याओं की सृष्टि तो करता है, इसके साथ ही उन लोगों की मानसिक अवस्था को भी टटोलने का प्रयास अवश्य ही होना चाहिए. उनको मौलिक अधिकारों से कम से कम वंचित न किया जाए, इस पर ध्यान रखना मानवीय दृष्टि से उचित होगा।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष –

1. प्रव्रजन इच्छाकृत अथवा अनिच्छाकृत रूप से हो सकता है।
2. प्रव्रजनकारी प्रव्रजन करते समय यह अनुमान नहीं लगा सकते हैं कि अपने जगह (उत्सस्थल) की तुलना में उन्हें लक्ष्यस्थल में कितनी सुविधा लाभ होगी।
3. प्रव्रजन करनेवाले लोग हमेशा असुरक्षा में रहते हैं ।
4. प्रव्रजन करनेवालों का मानव अधिकार प्रायः भंग होता है ।
5. किसी किसी स्थल पर प्रव्रजन करनेवाले लोगों की मानसिक स्थिति को हृदयंगम कर उनके प्रति सहृदयता प्रदर्शन करना उचित होगा।

संदर्भ संकेत

1. प्रव्रजन – असमिया विकिपिडिया https://as.m.wikipedia.org
2. The Guardian (असमिया विकिपिडिया)
3. वही
4. आषाढ़ का एक दिन –मोहन राकेश , पृष्ठ 45
5. वही
6. परमात्मा का कुत्ता –मोहन राकेश (हिन्दी समय से साभार)
7. परिन्दा –निर्मल वर्मा (श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ, पृष्ठ 68)
8. वही

सहायक ग्रंथ/पत्रिका

1. वर्मा, निर्मल ,श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ
2. राकेश मोहन, आषाढ़ का एक दिन
3. हिन्दी समय
4. तिवारी शेखर, बालेन्दु नागर कथाएँ